मतपत्र के साथ रसीद जारी करने की योजना

*792. **श्री हुकम चन्द कछवाय** : क्या विधि और न्याय मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या चुनावों के दौरान मतदान करते समय मतपत्र के साथ किसी प्रकार की रसीद जारी करने सम्बन्धी कोई योजना सरकार के विचाराधीन है ; और

(ख) यदि हां, तो इस बारे में कब तक कोई निर्णय कर लिये जाने की सम्भावना है ?

THE MINISTER OF LAW AND JUSTICE (SHRI H. R. GOKHALE) : (a) No, Sir. The Election Commission has, however, decided to introduce ballot papers with counterfoils.

(b) The Election Commission hopes it would be possible to introduce the system of ballot papers with counterfoils in the next general elections to the various State Legislative Assemblies which are due to be held in February, 1972.

श्री हुकम चन्द कछवाय : अध्यक्ष महोदय, पिछले दिनों चुनाव अधिकारी के समक्ष यह विचार आया था कि जो व्यक्ति मत देने आयगा उसे एक परिचय कार्ड दिया जायगा, जिसमें उसका चित्र होगा, क्या सरकार इस बात को चालू करने के लिए तैयार है, यदि नहीं, तो इसमें क्या दिक्कत है ? दूसरा सवाल—जो मत-पत्र अलग-अलग बूथों के आते हैं, उन को इकट्ठा मिला देते हैं । उनको फिर से जुदा कर के मत-गणना हो—क्या आप ऐसी प्रथा चालू करने वाले हैं ?

MR. SPEAKER : The question is about issuing some sort of receipt along with the ballot paper, but you are asking something else.

SHRI H. R. GOKHALE : It is entirely a different aspect of the matter.

MR. SPEAKER : He may not ask the next question about chemical application.

श्री हुकम चन्द कछवाय : क्या सरकार ने समाचार-पत्रों में इस बात को देखा है या उनके ध्यान में यह बात आई है कि बम्बई से श्री कुलकर्णी यहां आये थे, उन्होंने सिद्ध कर दिया है कि दिया हुआ मत-पत्र रद्द हो सकता है और स्याही उभर सकती है ?......

अध्यक्ष महोदय : ऐसी बातें ध्यान में मत लाया करें ।

श्री हुकम चन्द कछवाय : आप चाहते हैं कि ऐसी बातें ध्यान में न लाई जांय और यह सरकार गड़बड़ करती रहे .....

अध्यक्ष महोदय : आप आ गये हैं, गड़बड़ कैसे हो सकती है ।

श्री हुकम चन्द कछवाय : मैं सरकार से जानना चाहता हूं कि सरकार के ध्यान में यह बात आई है या नहीं ? वह इन्कार करे कि नहीं आई है । समाचार-पत्रों में ये सब बातें आई हैं, फोटो आये हैं और काफी विद्वान लोगों ने इस बात को स्वीकार किया है......

अध्यक्ष महोदय : आर्डर प्लीज़ ।

श्री हुकम चन्द कछवाय : अध्यक्ष महोदय, उत्तर दिलवाइये । सरकार कह दे कि हमें पता नहीं है । मैं सरकार से यह बात सुनना चाहता हूं ।

अध्यक्ष महोदय : अगर ऐसी बातें पूछनी हैं तो प्रश्न भी दुरस्त किया करें । प्रश्न में रसीद के बारे में लिखा है और आप कहां चले गये—बम्बई से कौन आया था, कौन नहीं आया था ।

श्री समर गुह ।

श्री हुकम चन्द कछवाय : अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी व्यवस्था चाहता हूं । जो मतदाता मत देने जाय, अपने साथ अपना परिचय-पत्र और फोटो रखे—क्या ऐसी प्रथा सरकार चालू करने

जाती है—इसका उत्तर सरकार ने नहीं दिया है, आप इसका उत्तर दिलवाइये ।

MR. SPEAKER : No, I am not allowing. He does not see his own question. He is asking outside the scope of his question. The question is whether the Government is contemplating any scheme to issue some sort of a receipt along with ballot paper at the time of voting.

श्री हुकम चन्द कछवाय : अध्यक्ष महोदय, मैं यह बात मानने को तैयार नहीं हूँ । मेरा ऐसा कहना है कि जो मत देने आते है उनको फोटो और परिचय-पत्र दिया जाय......

MR. SPEAKER : Nothing will go on record.

श्री हुकम चन्द कछवाय : **

MR. SPEAKER : Will you please sit down or not ?

श्री हुकम चन्द कछवाय : हमें देखने को मिला है कि विरोधी दल के लोग आप से नमस्कार करते है, आप उसकी अवहेलना करते है ।

MR. SPEAKER : Please sit down.

वावेला क्या करना है, प्रश्न दुरुस्त कीजिये ।

श्री हुकम चन्द कछवाय : आप जब चेयर पर आते हैं, सब आप के सम्मान में खड़े होते है, विरोधी लोग आप को हाथ जोड़ते हैं, आप उनको नमस्कार न करके उस तरफ नमस्कार करके बैठ जाते हैं—यह अवहेलना नहीं तो क्या है ।

अध्यक्ष महोदय : मैं इससे ज्यादा बरदाश्त नहीं कर सकता हूं ।

श्री हुकम चन्द कछवाय : क्या करेंगे, बाहर निकाल देंगे ?

अध्यक्ष महोदय : ऐसा ही है, और कोई चारा नहीं है ।

श्री हुकम चन्द कछवाय : यह भी देख लीजिए, निकालकर, क्या परिणाम होता है ।

MR. SPEAKER : You are getting very rude इसे बरदाश्त नहीं करूंगा ।

श्री हुकम चन्द कछवाय : आप हर सवाल को टलवा देते हैं ।...(व्यवधान)...

MR. SPEAKER : I will have to take action against you if you go on insisting like this.

श्री हुकम चन्द कछवाय : आप धमका कर बिठवाना चाहते हैं क्या ?...(व्यवधान)...

अध्यक्ष महोदय : मैं हाउस से कहना चाहता हूँ I will have to ask him to withdraw from the House. The Member is very rude.

श्री श्यामनन्दन मिश्र : उन्होंने जो सवाल पूछा वह गैर-मुनासिब नहीं था। हम लोगों की भी कुछ जिम्मेदारी है । His question was about the voter having identity card carrying his photo. That was not irrelevant.

MR. SPEAKER : He is wasting the time of the House and getting rude and you are defending him (*Interruption*) He is arguing with the Chair. (*Interruption*) I am not allowing it.

श्री आर० वी० बड़े : अध्यक्ष महोदय, अभी तो पार्लिमेंट शुरू हुई है । मैं आप से क्षमा मांगता हूं लेकिन इतना कहना चाहता हूं कि जब आपने कहा कि सवाल में रेलिवेंसी नहीं है तो वे बैठ गये ।...(व्यवधान)...

श्री मधुलिमये : उन्होंने कहा कि आप धमकाकर बिठाना चाहते हैं, यह उचित नहीं है ।...(व्यवधान)... He said : You want to threaten me. That can't be addressed to the Chair.

**Not recorded.

डा० कैलाश : मैम्बर ने यह भी कहा कि इसका नतीजा खराब होगा ।. .(व्यवधान)... इसका नतीजा बड़ा खराब होगा—यह बात यहां पर नहीं कही जा सकती है ।... (व्यवधान)...

अध्यक्ष महोदय : मुझे निहायत अफसोस है कि जो पार्टी के लीडर हैं वे भी डिफेन्ड करते हैं ऐसे कान्डक्ट को ।...(व्यवधान)...

श्री आर० डी० बड़े : वे इस हाउस के एक सीनियर मेम्बर है...(व्यवधान)...

अध्यक्ष महोदय : मैं इससे ज्यादा बर्दाश्त नहीं करूंगा। जो कुछ इस मैम्बर ने कहा उस पर मैंने तीन बार वार्निंग दी और कहा कि यह इर्रेलिवेन्ट है, फिर भी यह नही माने तो फिर इस तरह से हाउस कैसे चलेगा ? I will have to ask him to withdraw from the House or express his regret for what he said.

श्री शंकुतंत धोते : अध्यक्ष महोदय, सम्मानित सदस्य श्री कछवाय ने बार-बार सवालात पूछने की कोशिश की और सवालात पूछते वक्त उन्होंने चेयर का, कुर्सी का कोई अपमान नही किया...(व्यवधान)...उन्होंने बार-बार अपना सवाल पूछने की कोशिश की। बार-बार सवाल पूछने की कोशिश करने से कुर्सी का अपमान होता है, ऐसी बात नहीं है। ऐसी अवस्था मे मैं समझता हूं कि कछवाय ने कुर्सी का अपमान नही किया है और न आपको अपमानित किया है फिर उनसे बाहर जाने के लिए कहना मेरे खयाल से उनके ऊपर अन्याय होगा।...(व्यवधान)...

अध्यक्ष महोदय : अगर मेम्बर ने अपमान नहीं किया है तो वे खुद कहें कि मैंने नहीं किया है। मैंने कहा कि उन्होंने किया और अब अगर वे कहें कि मैंने नही किया तो मैं उनकी बात मान लूंगा...(व्यवधान)...

श्री हुकम चन्द कछवाय : आपने मेरी बात को गलत समझा है इसलिए मैं खुलासा करना चाहता हूं...

अध्यक्ष महोदय : जी नहीं।...(व्यवधान)...

श्री हुकम चन्द कछवाय : तो फिर मैं बैठ जाता हूं।...(व्यवधान)...

अध्यक्ष महोदय : सीधी सी बात है कि आप अपने कहे पर रिग्रेट करते हैं या नहीं... (व्यवधान)...मैंने कहा है कि यह रेलिवेन्ट नही है। अब अगर आप रिग्रेट नहीं करते हैं तो मुझे अफसोस है कि आपको विद्ड्रा करना पड़ेगा... (व्यवधान)...

श्री हुकम चन्द कछवाय . आप झुंड के दबाव पर हमको दबा नही सकते हैं। आप यहा पर इतना बहुमत लेकर आये है लेकिन आप दबा नही सकते है।

MR. SPEAKER . Unless the hon. Member expresses his regret or withdraws from the House, I am not going to proceed further Will he express his regret or not ?

श्री के० एन० तिवारी : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रपोज करता हूं कि अगर माननीय सदस्य एपालोजाइज् नही करते हैं तो उनको तीन दिन के लिए बाहर कर दिया जाये ...(व्यवधान)...

श्री समर गुह : एक रोज् आपको भी यही चीज् देखनी पड़ेगी ...(व्यवधान)...

MR. SPEAKER : He must express his regret. This Member is insisting on disobeying...

श्री हुकम चन्द कछवाय : अध्यक्ष महोदय, जो कुछ मैंने कहा है वह बुरी नीयत से नही कहा है। मैं इस सम्बन्ध में इतना ही कहना चाहता हूं कि हम जो सवाल पूछते हैं उसे आप नामंजूर करते हैं इसलिए कि हमारा सवाल पूछना आपको गैरवाजिब लगता है। मैंने अगर गलत सवाल किया है तो मैं खेद प्रकट करता हू लेकिन आप हमको इस तरह से निगाह से ओझल मत कीजिए। मैंने एक बात और कही है कि जब सब सदस्य खड़े होकर नमस्कार करते हैं तो आप उधर ही नमस्कार करके बैठ जाते हैं और इधर की नमस्कार स्वीकार ही नहीं करते हैं।

अध्यक्ष महोदय : अगर ऐसे ही रिपीट करता हूं तो this is too bad My duty is to judge the relevancy. After bringing his own question to his notice, still I find that he goes on persisting .....

SHRI INDER J. MALHOTRA : You are very lenient to him. You had asked him earlier to withdraw from the House.

अध्यक्ष महोदय : मैं इससे ज्यादा बर्दाश्त करने के लिए तैयार नहीं हूं। मैं फाइनली कहता हूं।

Once for all, this is a warning. I accept this half-hearted regret today, but I am not going to tolerate it in future, especially in the hon. Member's case.

आज तो मैं इस तरह की रहमदिली की रिग्रेट को एक्सेप्ट कर लेता हूं।

PROF. MADHU DANDAVATE : I have a submission to make The hon. Member has already expressed his regrets. The Members of the Treasury Benches also should show tolerance.

श्री आर० वी० बड़े : अध्यक्ष महोदय, मेजारिटी की वजह से आप इस तरह की बात कहते हैं। मैंने पहले की पार्लमेंट भी देखी है लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ। इस तरह का प्रस्ताव कभी नहीं आया।

अध्यक्ष महोदय : अगर मेजारिटी की बात होती और उसका मुझे फ़ायदा लेना होता तो शक्ल ही और होती।...(व्यवधान)...

I do not want to be very harsh with him, but I want strict observance of rules and also respect for the Chair. If this is not shown, I am not going to proceed further. I will better leave the Chair rather than allow such conduct.

श्री बाबुवंत घोते : अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी कुर्सी का बहुत अदब करता हूं लेकिन आपसे दर्खास्त करता हूं कि पार्टी-इन-पावर के सम्मानित सदस्य श्री तिवारी जी ने जिस ढंग से यहां पर बात की और उन्होंने जो कहा कि कछवाय को इस सदन से निकाल दिया जाये, इस धमकी को भी वे वापिस करें।...(व्यवधान)...

श्री समर गुह : यह आपने जो बर्ताव किया है उससे इज्जत घटी है।

He has impaired the honour of the ruling party by proposing like that. If Shri K. N. Tiwary wants to brow beat us like that, we also know how to defend our rights.

MR. SPEAKER : I am not going to allow it. Do not create further complications. I am not allowing him any more.

SHRI SAMAR GUHA : How can Shri Tiwary get up and say that......

MR. SPEAKER : Please sit down. Every member has a right to propose that if a member does not behave properly disciplinary action should be taken against him. He was right in doing so.

SHRI K N TIWARY : I have proposed accordingly

SHRI SAMAR GUHA : We are in a minority in this House. It is our expectation from the Chair that the Chair would be sympathetic and compassionate to the interests of the Opposition. That is how democracy can be saved, not by bowing down to a brute majority.

MR. SPEAKER : It was only because the opposition is small that I was cautious. Otherwise I would have taken action against him as his conduct has been highly undesirable. He should be careful in future.

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS, AND SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI RAJ BAHADUR) : Regretting what has happened, may I say on behalf of my party that we welcome the ruling given by you? I assure you on behalf of my party that we shall extend our best and most loyal co-operation to you in maintaining due dignity and decorum in this House? May I also assure my friends on the other side that though we are in a majority—and a substantial majority—we shall never take undue advantage of it? All we want is that we should all co-operate in maintaining due decorum and dignity of the House. Let us project an image

of the House which will really present itself to the country and the entire World outside.

SHRI SAMAR GUHA : We wholly agree. Your honour is our honour. It is our duty to maintain your honour so that we maintain our honour.

श्री झांबुवंत धोटे : अध्यक्ष महोदय, मेरा पौइंट आफ आर्डर है। हमको कुछ कहने का या समझाने का अधिकार आपको है। माननीय राजबहादुर जी हमको क्या उपदेश करते हैं यह उनका अधिकार नहीं है।

अध्यक्ष महोदय : आप मेहरबानी करके बैठिए।

SHRI S M. BANERJEE : May I say that we have all respect for the Chair ? We do not expect any latitude because we are in a minority. We may be in a minority, but we are not refugees. I can assure you about that. We have been duly elected to this House We always believe in your impartiality and we will uphold your dignity. Whether there is a majority or minority is not the question. But I must say that truth must prevail in the House.

श्री झांबुवंत धोटे : मिनिस्टर फौर पार्लिया-मेंटरी अफयर्स को हमको सिखाने का क्या अधि-कार है ?

श्री राज बहादुर : मैंने तो सीखने की बात कही है, सिखाने की नही। मैं खुद सीखता हूं।

MR. SPEAKER : I am sure about thing. Had Shri Vajpayee, he leader of the party, been here, this would not have been prolonged so much. I know what type of gentleman he is.

As for protection or anything of that kind, it is my duty to conduct the proceedings of the House in a fair and impartial manner. The day you think I am not maintaining it, there is no use my continuing to sit here. But after all, the rules of procedure and conduct of business, privileges, etc. were framed by this House and they must stick to them. I do not think any member can get up and go on arguing with the Chair and being rude to the Chair. This cannot be tolerated ; whether there is a majority or minority this side or that side, does not matter. Of course, I am not guided either by majority or minority. All of you are the same, equal to me. In that way, everybody is in a majority, But I will never tolerate such conduct in future I have been very lenient today. I have to keep the decorum and dignity of the House.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA : Just as the Chair is entitled to respect, every member is also entitled to respect...

MR. SPEAKER : You are a new member.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA : If that does not happen, then there is bound to be trouble.

MR. SPEAKER : The question hour is already over.

WRITTEN ANSWERS TO QUESTIONS

Pending Applications from Rajasthan for Licences

*782. SHRI N. K. SHARMA : Will the Minister of INDUSTRIAL DEVELOPMENT be pleased to state :

(a) whether a large number of applications for licences to establish industries in Rajasthan have been pending with the Government for a long time ;

(b) the number of pending applications at present and since when these are pending ; and

(c) the reasons for the delay in issuing licences ?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT (SHRI GHANSHYAM OZA) : (a) and (b). Out of the applications for grant of industrial licences for the setting up of new undertakings in Rajasthan received up the 31st May, 1971, 53 are pending. Of these, 3 relate to 1968, 4 to 1969, 21 to 1970 and 25 to 1971.

(c) Consideration of industrial licence applications necessitates fairly detailed examination of various aspects of the proposals and the disposal of particular applications is often